राजनीति विज्ञान

बी.ए.1 ईयर के छात्रों के लिए

द्वितीय प्रश्न पत्र : राष्ट्रीय आंदोलन एवं भारत का संविधान

"राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास"

प्रस्तुतकर्ता -

डॉ. नरेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा पत्र

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उधेशयों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देशय के लिए इसका उपयोग पूर्णत: प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करंगे और इसका व्यतिगत ज्ञान कि उन्नति के लिए ही प्रयोग करेंगे। इस ए-कंटेन्ट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

भारतीय राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय भावना के विकास के परिणामस्वरूप राजनीतिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ। भारतीयों ने राजनीतिक आंदोलन के माध्यम से अंग्रेजी सत्ता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक लंबा संघर्ष किया। अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना के उदय के निम्न कारण थे-

शोषणकारी आर्थिक नीति-

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का उदय विदेशी प्रभुत्व को चुनौती देने के रूप में हुआ। अंग्रेजी शोषणकारी आर्थिक नीतियों से भारतीय कृषि, परंपरागत उद्योग एवं हस्तशिल्प नष्ट होने लगे। भारतीय समाज के आर्थिक ढांचे में परिवर्तन आने लगा। सर्वप्रथम यह परिवर्तन भूमि एवं कृषि व्यवस्था में आया।

गाँवों की आत्मनिर्भरता को समाप्त किया गया। भूमि कर या लगान की राशि अधिक थी। कृषि का वाणिज्यीकरण किया गया। अब किसानों पर विशेष प्रकार की फसलें रुई, जूट आदि उत्पादित करने के लिए दबाव डाला जाने लगा। जंगल कानून अधिकार पारित कर चारागाहों एवं जंगल की भूमि के उपयोग करने के अधिकार छीन लिए गए।

ब्रिटेन के व्यापारियों के हित में भारतीय उद्योग धंधों को नष्ट किया जाने लगा। ब्रिटिश नीति के परिणामस्वरूप सबसे पहले भारत का वस्त्र उद्योग नष्ट हुआ। ब्रिटेन ने अपने उद्योगों के लिए भारत को कच्चे माल उत्पादक देश के रूप में परिवर्तित किया। अंग्रेजों ने ब्रिटेन के कारखानों में बनी वस्तुओं की खपत के लिए भारत का एक मंडी के रूप में उपयोग किया। भारतीय हस्तकार एवं शिल्पी बर्बाद होने लगे। ब्रिटेन के पूंजीपतियों ने चाय बागान, कोयला खानों, रेलवे, बैकों आदि में अपनी पूँजी लगाई। स्वदेशी उद्योगों के पतन से भारत की गरीबी में वृद्धि हुई।

अंग्रेजी शासन में भारतीय समाज में नए वर्ग का उदय हुआ। अंग्रेजों की शोषण नीति से इस वर्ग के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक हितों का एकीकरण हुआ। मजदूर, पूँजीपति, व्यापारी, बुद्धिजीवी मध्यम वर्ग आदि में राष्ट्रीय चेतना जागृत हुई।

प्रशासनिक एकीकरण -

अंग्रेजी सरकार ने अपने हितों के लिए एक समान कानून एवं एक प्रकार की न्याय व्यवस्था स्थापित की। एकीकृत प्रशासनिक व्यवस्था से भारतीय लोगों में पारस्परिक संपर्क बढ़ा। इसके परिणामस्वरूप भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।

यातायात एवं संचार के साधनों का विकास –

रेलवे, मोटर और आवागमन के अन्य आधुनिक साधनों ने सामाजिक स्तर पर भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आवागमन के साधन अंग्रेजी साम्राज्य की सुरक्षा के माध्यम थे किन्तु इसने भारतीयों को राजनीतिक आंदोलन के लिए संगठित करने का कार्य किया। तार, डाक आदि संचार के साधनों ने विचार के आदान- प्रदान एवं राजनीतिक आंदोलनों के कार्यक्रम निश्चित करने में सहायता प्रदान की।

प्रेस एवं साहित्य की भूमिका -

प्रेस ने राष्ट्रीय चेतना के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसने लोगों को राजनीतिक शिक्षा प्रदान दी। आर्थिक एवं राजनीतिक विचारों का प्रचार किया। ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों एवं कार्यवाहियों की आलोचना की। अंग्रेजों के दुर्व्यवहार, भारतीयों के साथ जातीय भेदभाव आदि के समाचार मुख्य रूप से समाचार पत्रों में छपने लगे। समाचार पत्रों के माध्यम से जनता के मध्य जनतंत्र, प्रतिनिधि सरकार, स्वाधीनता आदि विचारों का प्रचार हुआ। संवाद कौमुदी, सोमप्रकाश, हिन्दू पेट्रियट, अमृत बाजार पत्रिका, बंगाली, हिंदू आदि राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार करने वाले समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ।

देशभक्तिपूर्ण साहित्य ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में प्रमुख भूमिका निभाई। आधुनिक हिंदी के पिता भारतेंदु हरीशचन्द्र ने 876 में 'भारत दुर्दशा' नामक नाटक में अंग्रेजी शासन में भारत की दुर्दशा का दर्शाया। उर्दू में अल्ताफ हुसैन हाली, बंगला में बंकिमचंद्र चटर्जी, मराठी में विष्णु शास्त्री, चिपलुणकर आदि ऐसे राष्ट्रवादी साहित्यकार हुए जिनकी रचनाओं ने राष्ट्रवादी भावना को जागृत किया।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन -

राजा राममोहन राय के ब्रह्म समाज, दयानंद सरस्वती के आर्य समाज एवं स्वामी विवेकानंद के रामकृष्ण मिशन ने भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों को समाप्त कर

सामाजिक रूप से भारतीयों को एक करने का प्रयास किया। भारतीय संस्कृति के गौरव को उजागर कर आत्मसम्मान की भावना का विकास किया। इन सुधार आंदोलनों ने भारतीयों में राष्ट्रवादी भावना उत्पन्न की।

जातीय भेदभाव -

ब्रिटिश सरकार एवं अंग्रेजों की जातीय भेद की नीति के कारण भारतीयों के मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा की भावना भर गयी। यह अधिकांश देखने में आता था कि रेल के एक ही डिब्बे में अंग्रेज भारतीयों को अपने साथ यात्रा करने की अनुमति नहीं देते थे। भारतीय यूरोपीय लोगों के क्लब में नहीं जा सकते थे।

आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा -

पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीयों ने यूरोपीय राष्ट्रों के समसामयिक राष्ट्रवादी आंदोलनों का अध्ययन किया। वे मैजिनी, गैरीबाल्डी जैसे नेताओं के कार्यों से प्रभावित हुए। बर्क, मिल आदि के विचारों से परिचित हुए और एक मजबूत एवं एकताबद्ध भारत को बनाने का प्रयास करने लगे।

लार्ड लिटन की नीति -

गवर्नर जनरल लार्ड लिटन के कार्यों ने भारतीयों में असंतोष की भावना भर दी। इसने 4877 ई. में भयंकर अकाल केसमय भव्य 'दिल्ली दरबार' का आयोजन किया, जिसमें ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया। 4878 ई. के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट द्वारा भारतीय समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाया गया। 4878 ई. में शस्त्र एक्ट द्वारा भारतीयों के शस्त्र रखने पर प्रतिबंध लगाया गया।

इल्बर्ट बिल विवाद -

लार्ड रिपन के समय 4883 ई. में उसकी परिषद के विधि सदस्य पी.सी. इल्बर्ट ने एक विधेयक प्रस्तुत किया, जिसे इल्बर्ट बिल कहा गया। इस प्रस्ताव में भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपियनों के मुकदमों का निर्णय का अधिकार दिए जाने का प्रावधान था किंतु यूरोपियनों के विरोध के कारण यह बिल पारित नहीं हो पाया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 से 30 दिसंबर 1885 के मध्य गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय, बम्बई में तब हुई जब भारत की विभिन्न प्रेसीडेंसियों और प्रान्तों के 72 सदस्य बम्बई में एकत्र हुए| भारत के सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी एलेन ओक्टोवियन ह्युम ने कांग्रेस के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी| उन्होंने पुरे भारत के कुछ महत्वपूर्ण नेताओं से संपर्क स्थापित किया और कांग्रेस के गठन में उनका सहयोग प्राप्त किया| दादाभाई नैरोजी, काशीनाथ त्रयम्बक तैलंग,फिरोजशाह मेहता,एस. सुब्रमण्यम अय्यर, एम. वीराराघवाचारी,एन.जी.चंद्रावरकर ,रह्मतुल्ला एम.सयानी, और व्योमेश चन्द्र बनर्जी उन कुछ महत्वपूर्ण नेताओं में शामिल थे जो गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में आयोजित कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल हुए थे| महत्वपूर्ण नेता सुरेन्द्र नाथ बनर्जी इसमें शामिल नहीं हुए क्योकि उन्होंने लगभग इसी समय कलकत्ता में नेशनल कांफ्रेंस का आयोजन किया था|

भारत में प्रथम राष्ट्रीय राजनीतिक संगठन के गठन का महत्व महसूस किया गया| अधिवेशन समाप्त होने के लगभग एक हफ्ते बाद ही कलकत्ता के समाचारपत्र द इंडियन मिरर ने लिखा कि “बम्बई में हुए प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत में ब्रिटिश शासन के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया है| 28 दिसंबर 1885 अर्थात जिस दिन इसका गठन किया गया था, को भारत के निवासियों की उन्नति के लिए एक महत्वपूर्ण दिवस के रूप में मान्य जायेगा| यह हमारे देश के भविष्य की संसद का केंद्रबिंदु है जो हमारे देशवासियों की बेहतरी के लिए कार्य करेगा| यह एक ऐसा दिन था जब हम पहली बार अपने मद्रास, बम्बई,उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त और पंजाब के भाइयों से गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज की छत के नीचे मिल सके|इस अधिवेशन की तारीख से हम भविष्य में भारत के राष्ट्रीय विकास की दर को तेजी से बढ़ते हुए देख सकेंगे”|

कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे |कांग्रेस के गठन का उद्देश्य,जैसा कि उसके द्वारा कहा गया,जाति, धर्म और क्षेत्र की बाधाओं को यथासंभव हटाते हुए देश के विभिन्न भागों के नेताओं को एक साथ लाना था ताकि देश के सामने उपस्थित

महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार विमर्श किया जा सके| कांग्रेस ने नौ प्रस्ताव पारित किये,जिनमें ब्रिटिश नीतियों में बदलाव और प्रशासन में सुधार की मांग की गयी|

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लक्ष्य और उद्देश्य

- देशवासियों के मध्य मैत्री को प्रोत्साहित करना।
- जाति, धर्म प्रजाति और प्रांतीय भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करना।
- लोकप्रिय मांगों को याचिकाओं के माध्यम से सरकार के सामने प्रस्तुत करना।
- राष्ट्रीय एकता की भावना को संगठित करना।
- भविष्य के जनहित कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार करना।
- जनमत को संगठित व प्रशिक्षित करना।
- जटिल समस्याओं पर शिक्षित वर्ग की राय को जानना।

संदर्भ/ग्रंथ

1. https://studywhiz.in/bharat-me-rashtrvad-ka-uday-evm-vikas/
2. https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%9F%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%AF-%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%B8-1448886448-2